NOIDA INTERNATIONAL UNIVERSITY

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

Volume 9 , Special Issue (III), 2022 ISSN: 2394-0298

NIU International Journal of Human Rights

A UGC CARE Listed Journal

NOIDA INTERNATIONAL UNIVERSITY

www.niu.edu.in

Scanned with CamScanner

CONTENTS

ISSN – 2394 - 0298 Volume 9, Special Issue (III), 2022

1	CYBERCRIME AND TERRORISM **Dr. Devendra S. Bhongade**	1
2	TERRORISM ISSUES AND CHALLENGES **D. S. Shambharkar**	4
3	TERRORISM AND THE RESPONSIBILITY OF THE MEDIA **Dr. Vivek M Diwan**	8
4	RISE OF RELIGIOUS TERRORISM IN INDIA: A BRIEF STUDY **Dr. G. R. Hashmi**	12
5	TERRORISM **Dr. Kailas V. Nikhade**	15
6	EFFECT OF SHORT TERM POSITIVE PSYCHOLOGY COURSE ON YOUNG ADULTS SELFESTEEM, RESILIENCE AND PERCEIVED STRESS **Dr. Milli Baby**	18
7	IMPACT OF TERRORISM ON HUMAN RIGHTS **Dr. Anil G. Dodewar**	22
8	ANALYSIS OF THE STATE OF TERRORISM IN SOUTH ASIA **Noureen**	26
9	TERRORISM: PAST AND PRESENT **Dr. Yogesh M. Sarode**	29
10	ECONOMIC IMPLICATIONS OF GLOBAL TERRORISM **Aparna Samudra**	32
11	NAXALISM & THE PROBLEM OF TRIBES IN INDIA **Supriya David**	37
12	IMPACT OF TERRORISM ON INDIAN CAPITAL MARKET: AN EMPIRICAL STUDY 2015 – 2021 **Dr. Sharad Sambare, Pankaj Dharmapal Mandape, Dr. Sandip Tundurwar**	41
13	TERRORISM – BIOWEAPONS: A CHALLENGE **Kajal J. Madkwade, Sumit S. Gurchal**	46

Scanned with CamScanner

CONTENTS

ISSN – 2394 - 0298 Volume 9, Special Issue (III), 2022

14	THE EMERGENCE OF CYBER TERRORISM IN THE AGE OF DIGITAL TECHNOLOGY **Mr. Sachin N. Sanap**	50
15	SOCIAL MEDIA & TERRORISM **Mr. Devendra H. Wasade**	53
16	भारतीय परिपेक्ष्य में आंतकवाद का स्वरूप **डॉ. संदीप तुंडूरवार, डॉ. शरद सांबारे, श्री. भास्कर वघाळे**	56
17	नक्सलवादके प्रभावों का विश्लेषण **डॉ. संतोष संभाजी डाखरे**	59
18	वैष्विक आतंकवाद स्थिति और समाधान **डॉ. टी. एल. मिर्झा**	63
19	लोकतंत्र, मीडिया और दोषमुक्त व्यक्तियों के सवाल **गुंजन सिंह**	72
20	पाकिस्तान व दहशतवादी संघटनाचे संबंध आणि भारतातातील दहशतवाद **डॉ. मंगेश आचार्य**	77
21	जम्मू काश्मीरमधील दहशतवाद आणि शासनाची भूमिका **डॉ. राम बुटले**	82
22	दहशतवाद राष्ट्रीय एकत्मातेपुढील आव्हान **डॉ. वकील टी. शेख**	86
23	दहशतवाद आणि मानवाधिकार **डॉ. रवी धारपवार**	93
24	दहशतवाद : जागतिक शांतता, समस्या आणि शेजारी राष्ट्रांची दहशतवादाला खतपाणी **डॉ. अर्चना उमरकर-घुलक्षे**	97

Scanned with CamScanner

CONTENTS

25 आतंकवाद एक विश्वव्यापी समस्या 103
डॉ. अर्चना ज्ञा- पाटील

26 दषतवाद एक जागतिक समस्या 108
प्रा. हरीदास लाडके

27 जागतिक दहशतवाद – एक राजकीय दृष्टीक्षेप 111
डॉ. एन. डी. बालपांडे

28 जागतिक दहशतवाद 116
डॉ. नितीन तुळशीराम कत्रोजवार

29 भारतातील दहशतवाद एक भीषण समस्या 124
प्रा. डॉ. प्रमोद स. घोनमोडे

30 दहशतवाद आणि नक्षलवाद 127
डॉ. प्रशांत विघे

Scanned with CamScanner

भारतीय परिपेक्ष्य में आंतकवाद का स्वरूप

डॉ. संदीप तुंडूरवार सहयोगी प्राध्यापक, राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, श्री बिंझाणी नगर महाविद्यालय नागपूर

डॉ. शरद सांबारे सहाय्यक प्राध्यापक, राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, यशोदा गर्ल्स आर्ट्स & कॉमर्स कॉलेज, नागपूर

श्री. भास्कर वघाळे राज्यशास्त्र विभाग, श्री बिंझाणी नगर महाविद्यालय, नागपूर

संक्षेप

वर्तमान समय में आतंकवाद भारत में एक भयावह रूप धारण कर चुका है। स्वतंत्र भारत में जो आतंकवादी व्यवहार पनप रहा है वह राष्ट्र में व्याप्त असमानताओं का परिणाम है। आज भारत के दक्षिण में लिट्टे, उत्तर पूर्वांचल में ईसाई धर्मावलंबी आदि, पंजाब में खाड़कू और मध्य प्रदेश में नक्सली गतिविधियां दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। वर्तमान समय में भारत के कोने-कोने में आतंकवादी गतिविधियां देखी जाती हैं। इन्हीं आतंकवादी गतिविधियों से भारत का प्रत्येक नागरिक बुरी तरह भयभीत एवं अपने को असुरक्षित महसूस करता है। यही नहीं हमारे देश में उच्च वर्ग समुदायों द्वारा देश के निम्न वर्ग समूहों का शोषण कर उन्हें भय के वातावरण में जीवन जीने को विवश किया जाता है। इस शोधनिबंध मे आतंकवाद से भारत मे हुई विविध घटनाओ का आकलन किया गया है। दुय्यम संकलित तथ्यो के आधार पर भारतीय परिपेक्ष्य में आंतकवाद की स्थिती का विश्लेषण कीय गया है।

सूचक शब्द :- आतंकवाद, इस्लामिक आतंकवाद, नक्सलवाद

आतंकवाद का नाम लेते ही हमारे मस्तिष्क में सर्वप्रथम कश्मीर उभरता है। सर्वाधिक ध्यान देने वाला तथ्य यही है कि कश्मीर भारत और पाकिस्तान के बीच की समस्या बन गया है। इसी समस्या ने वहां आतंकवाद को जन्म दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप वहां आतंकवादी गतिविधियां निरंतर क्रियाशील रहती हैं। अतः यह जानना आवश्यक हो जाता है कि किन कारणों से कश्मीर दो देशों के मध्य विवाद की कड़ी है। स्वतंत्रता के बाद जहां भारत और पाकिस्तान दो नए राज्य बने वहीं देसी रियासतें एक प्रकार से स्वतंत्र हो गईं। ब्रिटिश सरकार ने घोषणा कर दी थी कि देशी रियासतें अपनी इच्छानुसार भारत अथवा पाकिस्तान में विलय हो सकती हैं। अधिकांश रियासतें भारत अथवा पाकिस्तान में मिल गईं और उनकी कोई समस्या उत्पन्न नहीं हुई। कश्मीर की स्थिति कुछ विशेष प्रकार की थी। यहां की जनसंख्या का बहुसंख्यक भाग मुस्लिम धर्म था, परंतु यहां का आनुवांशिक शासक एक हिंदू राजा था। अगस्त 1947 में कश्मीर के शासन ने अपने विलय के विषय में कोई तत्कालीन निर्णय नहीं लिया। पाकिस्तान इसे अपने साथ मिलाना चाहता था। 22 अक्टूबर, 1947 को उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत के कबालियों एवं अनेक पाकिस्तानियों ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। पाकिस्तान ने भी अपनी सीमा पर सेना को तैनात कर दिया। 26 अक्टूबर को कश्मीर के शासक ने आक्रमणकारियों से अपने राज्य को बचाने के लिए भारत सरकार से सैनिक सहायता की मांग की और साथ ही कश्मीर को भारत में सम्मिलित करने की प्रार्थना भी की, भारत सरकार ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। 27 अक्टूबर को भारतीय सेनाएं कश्मीर भेज दी गईं तथा युद्ध समाप्ति पर जनमत संग्रह की शर्त के साथ कश्मीर को भारत का अंग मान लिया गया। भारत कश्मीर की सुरक्षा के कारण और उधर पाकिस्तान द्वारा आक्रमणकारियों को सहायता देने की नीतियों के कारण कश्मीर दोनों राष्ट्रों के बीच युद्ध का क्षेत्र बन गया। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् से ही भारत चार युद्ध लड़ चुका है। ये सभी युद्ध उन परिस्थितियों में ही लड़े गए जब पड़ोसी देशों द्वारा उसकी भूमि भारत विरोधी भावना उत्पन्न होने लगी थी, यही भावना आगे चलकर प्रबल एवं अति तीव्र होती चली गई जिसने पहले अलगाववाद एवं फिर आतंकवाद का रूप धारण कर लिया।

भारत दुनिया का सबसे ज्यादा आतंकवाद पीड़ित देश के रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में 1990 में प्रतिबंधित किए गए एक उग्रवादी संगठन उल्फा की गतिविधियां सक्रिय हैं और उसके द्वारा बम विस्फोट में इस साल (2009) 27 लोग मारे गए। विशेष जाति के कुछ एक-दो सरफिरों ने पूर्व प्रधानमंत्री (श्रीमती इंदिरा गांधी) के निवास स्थान पर

Scanned with CamScanner

ही उनकी हत्या कर दी और पूरी जाति को बदनाम किया परंतु इस घटना के पश्चात् देशभर में सिक्खों को निशाना बनाया गया एवं मात्र सिक्ख होने के कारण वे हत्या एवं सामूहिक हत्या का शिकार हुए। यह घटना संपूर्ण देश के लिए अत्यन्त निंदनीय एवं शर्मनाक थी। आतंकवाद निरोधक समन्वयक डेनियल बेंजामिन द्वारा जारी की गई रिपोर्ट में कहा गया कि भारत आतंकवाद से सबसे ज्यादा पीड़ित देशों में से एक है। वर्ष 2009 में आतंकवादी घटनाओं में यहां 1,000 से ज्यादा लोग जान गंवा चुके हैं। कश्मीर, पूर्वोत्तर और नक्सलियों के प्रभाव वाले इलाकों में आतंकवाद का व्यापक असर है। रिपोर्ट में कहा गया है कि स्पष्ट प्रतिबद्धता के बावजूद भारत सरकार के आतंकवाद निरोधी प्रयासों में उसकी पुरानी कानूनी और प्रवर्तन प्रणालियां बाधक बनी हुई हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के समक्ष आतंकवाद का खतरा बरकरार है और अब भी बडे हमले होने की आशंका है।

जम्मू कश्मीर में सक्रिय इस्लामी आतंकवाद- पिछले 25 वर्षों से भी अधिक समय से जम्मू कश्मीर में हिंसा व विनाशलीला का तांडव मचानेवाला आतंकवाद का सबसे खतरनाक और अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप् इस्लामी या इस्लामिक आतंकवाद है। दीनानाथ मिश्र के अनुसार, "सारी दुनिया में एक अरब से भी अधिक मुसलमान हैं। करीब पचास मुस्लिम देश हैं। अधिकांश मुस्लिम देशों में भी कट्टरतावादी इस्लामिक शक्तियों की गतिविधियां सामाजिक अशांति, असंतोष और संघर्ष का कारण बन रही हैं। अनेक सरकारें, यहां तक कि अनेक इस्लामिक सरकारें कट्टरतावादी इस्लाम की समस्या से जूझ रही हैं। इनमें टर्की और इण्डोनेशिया जैसे देश तो हैं ही, खाड़ी के देश भी हैं और भारत के पड़ोस में पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे देश हैं।"[2] दैनिक जागरण के मुख्य संपादक श्री नरेंद्र मोहन ने अपने एक लेख "इस्लामी आतंकवाद से मुंह चुराती भारतीय राजनीति" में लिखा है - "अब इस बात से कोई इंकार नही कर सकता कि इस्लामी आतंकवाद विश्व के लिए एक बहुत बड़ा खतरा बन चुका है। यद्यपि इस आतंकवाद को विश्व के अनेक राष्ट्रों का सीधा समर्थन प्राप्त है, फिर भी विश्व के किसी भी मंच से इस्लामी आतंकवाद और कट्टरवाद की भर्त्सना नहीं की जा रही है। विश्व के मंचों से आतंकवाद की जो आलोचना हुई भी है उसमें इस्लामी आतंकवाद का नाम लेने से बचा गया है, जबकि सच यह है कि आज विश्व में जहां कहीं भी आतंकवाद है वह लगभग इस्लामी कट्टरवादियों की ही देन है। वर्तमान में विश्व में अनेक ऐसे इस्लामी संगठन हैं जो 'इस्लाम खतरे में है' का नारा लगाते हैं और इस्लाम के तथाकथित शत्रुओं को समाप्त करने के लिए जेहादी आंदोलन छेड़े हुए हैं।"[3] वैसे तो आतंकवादी संगठनों का जाल पूरे देश में फैला हुआ है पर वे विशेष रूप से जम्मू कश्मीर में कहर बरसा रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के सरगना ओसामा बिन लादेन का कुख्यात आतंकी संगठन अल कायदा के अतिरिक्त लश्कर-ए-तय्यबा, जैश-ए-मौहम्मद, हिजबुल मुजाहिदीन आदि आतंकी संगठन इस राज्य में सक्रिय हैं। हालांकि भारत में अभी अल कायदा की उपस्थिति बहुत बड़े स्तर पर सामने नहीं आई है फिर भी वह अपने पैर फैला रहा है इसीलिए केंद्र सरकार ने ओसामा बिल लादेन के 'अल कायदा' संगठन को आतंकवादी संगठन घोषित करते हुए उसे पोटा के तहत प्रतिबंधित कर दिया है। यह निर्णय तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है। भारत का पड़ोसी देश पाकिस्तान आतंकवाद को खुला राजनीतिक और आर्थिक समर्थन देता आ रहा है। उसका उद्देश्य यही है कि नियंत्रण रेखा पर संघर्ष बना रहे। इसके पीछे पाकिस्तान के शासकों का यह मनोविज्ञान रहा है कि इसके माध्यम से उनके देश में राजनीतिक दबावों और विसंगतियों से छुटकारा मिल जाएगा। इसके लिए वह विभिन्न संघर्षों, छदम युद्धों, जघन्य हत्याकांडों और वीभत्स आतंकवादी गतिविधियों का संचालन करता आया है। कश्मीर मुद्दे को लेकर अनेक जघन्य हत्याएं करा चुका है। हजारों सैनिक भी मौत की नींद सो चुके हैं। वह निरंतर आतंकवादी गतिविधियों को अब भी जारी रखे हुए है।

अक्टूबर 1993 को श्रीनगर के हजरत बल दरगाह में आतंकवादियों का कब्जा, 1999 में आईसी-814 विमान का अपहरण, 1 अक्टूबर 2001 को जम्मू कश्मीर विधान सभा के बाहर विस्फोट, 3 नवम्बर 2001 को दक्षिण दिल्ली के शापिंग कॉम्पलैक्स अंसल प्लाजा में हमला, 13 दिसंबर, 2001 को भारतीय संसद पर हमला, मई 2002 को जम्मू के कालूचक्र में आतंकवादी हमला, 24 सितंबर 2002 को गुजरात के गांधीनगर के अक्षरधाम मंदिर में हमला, 25 अगस्त 2003 को मुंबई के ताज होटल के सामने और मुंबा देवी मंदिर के पास झावेरी बाजार में हुए दो शक्तिशाली विस्फोट, 7 मार्च, 2006 को काशी के प्रसिद्ध संकटमोचन मंदिर व कैंट रेलवे स्टेशन पर शक्तिशाली बम विस्फोट, 26 3 नवम्बर 2008 मुंबई और 14 फरवरी 2019 पुलवामा हमला इन आतंकी कार्रवाइयों के कुछ उदाहरण हैं।[4] अतः आज धरती का स्वर्ग कहे जाने वाला कश्मीर बुरी तरह आतंकवाद की चपेट में है। भारत के इस राज्य में समय-

Scanned with CamScanner

समय परआतंकवादी गतिविधियां चलती रहती हैं। यहां कई आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं।

भारतीय संदर्भ में आतंकवाद की चर्चा करते समय सामान्यतया पिछले लगभग दो दशक से उभरे उग्रवादी आंदोलन तथा आतंकवादी गतिविधियों की ओर संकेत किया जाता है। परंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् के पिछले लगभग चालीस वर्षों में ऐसे आंदोलन अनेक बार और विभिन्न क्षेत्रों तथा संदर्भों में उभरते रहे हैं, जो उग्रवाद और आतंकवाद पर थे। वास्तविकता यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में एक नए राजनीतिक एवं आर्थिक संतुलन की प्रक्रिया प्रारंभ हुई थी। इस संतुलन को बनाए रखने में कई व्यवधान उपस्थित हुए, विभिन्न आंदोलन प्रारंभ हुए, जिनमें से कुछ का स्वरूप उग्रवादी तथा आतंकवादी भी हुआ। पचास के दशक में भी राष्ट्रीय जीवन में कुछ पृथकवादी तथा उग्रवादी आन्दोलन हुए थे। पूर्वी भारत में नगाओं तथा अन्य जनजातियों के आंदोलन हुए थे जिनमें से अनेक का समाधान भी हुआ, और उत्तर पूर्व के क्षेत्रों में अभी भी कहीं-कहीं अशांति पाई जाती है। इसी तरह दक्षिण में भी दक्षिण आंदोलन ने एक समय पृथकतावादी उग्र रूप धारण कर लिया था। परंतु प्रजातांत्रिक प्रक्रियाओं के संदर्भ में क्षेत्रीय दलों के विकास के साथ दक्षिण सहित अनेक प्रांतों में उनकी क्षेत्रीय स्वायत्तता और सम्मान को आधार मिला तथा वे कुल मिलाकर राष्ट्रीय धारा के अंग बन गए। यद्यपि इसमें तनाव एवं बाधाएं जब तब उत्पन्न होती रहती हैं। पंजाब समस्या और उससे जुड़ा आतंकवाद भी पचास के दशक से चल रहे अकाली आंदोलन और राजनीति की ही एक परिणति रही। वैसे भारत में पंजाब के सिवाय भी आतंकवाद के अन्य आयाम व क्षेत्र हैं। अमर श्रीवास्तव ने इन्हें तीन मुख्य उपसमूहों में बांटा है। पंजाब में आतंकवाद, उत्तर-पूर्वी सीमावर्ती प्रांतों में सशस्त्र विद्रोह और कुछ प्रान्तों में नक्सलवाद"। इन तीनों प्रकार के "आतंकवादी" उपसमूहों में उनकी विचारधाराओं, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय या सामुदायिक प्रतिबद्धता, उनके अंगों के स्वरूप तथा भौगोलिक परिस्थितियों में पर्याप्त अंतर है।[5] पिछले पच्याहत्तर वर्षों के स्वतंत्रता राष्ट्रीय जीवन के राजनीतिक, आर्थिक संतुलन की प्रक्रिया और सामाजिक गतिशीलता के कुछ व्यवधानों के परिणामस्वरूप कुछ अधिक रहा तथा क्षेत्रों में विषाद, क्षोभ और सफलता से उत्पन्न निराशा की भावनाएं उत्पन्न हुई हैं। शहरी और ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में पहले से संपन्न मापित वर्गों की राजनीतिक और आर्थिक शक्ति और बढ़ी है। संविधान द्वारा निर्धारित समानता और सामाजिक न्याय के लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में अधिक प्रगति नहीं हो सकी। इसके साथ ही संस्कार विहीन आर्थिक प्रगति, उपभोगवाद पर आधारित पूंजीवादी ढांचा तथा राजनीतिक जीवन में मूल्यों का पतन, अवसरवाद तथा हिंसा की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है। इस परिवेश में राष्ट्रीयता के स्थान पर स्थानीयता या संकुचित क्षेत्रीयवाद को प्रोत्साहन मिला है। ऐसे में कोई आश्चर्य नहीं कि अल्पसंख्यक, कमजोर व शोषित वर्ग तथा क्षेत्रीयवादी समूहों का आकर्षण, हिंसात्मक तथा आतंकवादी तरीकों के माध्यम से अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति करने की तरफ होता है। फिर चाहे यह "नक्सलवादी" तरीके से हो।

संदर्भ:-

1. खंडेला, मानचंद (2010)'अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद' राजीव प्रकाशन जयपूर पृ. 80
2. दीनानाथ मिश्र, (2001) 'इस्लाम मुसलमान और आतंकवाद' दैनिक जागरण बरेली पृ. 10
3. त्रिपाठी, मधुसूदन (2008) (राष्ट्रीय एकता और आतंकवाद) ओमेगा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, पृ. 80
4. अमर श्रीवास्तव (2010) संपादकीय लेख, अमर उजाला, 13 सितंबर
5. नरेश (2003) 'भारतीय आतंकवाद' साहित्य प्रकाशन, मयूर विहार दिल्ली पृ. 74-77

Scanned with CamScanner